Name- Dr. Madhulika.
HOD (Poli.Science)
Adarsh College Raj Dhanwar

Sem-II Paper- 4. (भारतीय राजनीतिक चिंतक)
Lession- 2. (Raja Ram Mohan Roy and Indian Renaissance)-(1772 - 1833)
Objective Ques.

(1) राजा राम मोहन राय का जन्म कब हुआ था ?
(A) 22 May 1772 (B) 21 May 1771, (C) 20 May 1770 (D) 15 May 1774

(2) 'ब्रह्म समाज' की स्थापना कब की गई ?
(A) 1828 (B) 1827 (C) 1820 (D) 1826

(3) सती प्रथा का विरोध सबसे अधिक किसने किया ?
(A) स्वामी विवेकानन्द (B) राजा राम मोहन राय (C) तिलक जी (D) दयानंद सरस्वती

(4) राजा राम मोहन राय ने किन पत्रों का प्रकाशन किया ?
(A) सम्वाद कौमुदी (B) मिरात उल अखबार (C) दोनों

(5) राजा राम मोहन राय ने 1819 ई. में हिन्दू कॉलेज की स्थापना कहाँ की ?
(A) कलकत्ता (B) बम्बई (C) चेन्नई

(6) राजा राम ने सती प्रथा निषेध कानून किस वर्ष प्रकाशित करवाया ?
(A) 1829 (B) 1826 (C) 1839

(7) आत्मीय सभा की स्थापना कब की गई ?
(A) 1830 (B) 1815 (C) 1820

Ans- (1) → (A) (2) (A) (3) (B) (4) (C) (5) (A) (6) (A)

(7) (B)

Scanned by CamScanner

Dr. Madhulika

Q. भारतीय दर्शन में राजा राम मोहन राय के योगदानों का वर्णन करें ?

उत्तर :- भूमिका :-

समाज को दिशा और गति देने वाले व्यक्ति ही महापुरुष या महान् प्रतिभा वाले कहे जाते हैं। और ऐसी महान् प्रतिभाओं में राजा राम मोहन राय का विशेष रूप से उल्लेखनीय है। राजा राम मोहन राय उस वैचारिक क्रांति के सृष्टा थे जिसने आधुनिक भारत को जन्म दिया। उन्होंने उस देश को मध्ययुगीन दलदल में फंसा पाया और उसमें ऐसी जान फूंकी कि भारतीय विचार और जीवन धारा ही बदल गई। धर्मगत रूढ़ियों, अंधविश्वासों तथा सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने के लिए चलाए गए विभिन्न धार्मिक और सामाजिक आन्दोलनों में राजा राम मोहन राय द्वारा स्थापित 'ब्रह्म समाज' एक अग्रणीय स्थान रखता है। विचारों और कार्यों के माध्यम से उस समाज ने भारतीय सामाजिक जीवन को एक नई दिशा प्रदान की है।

* वी० एस० नरवणे के अनुसार :-

"उनकी दृष्टि विकृत रूढ़ियों और रीति-रिवाजों से धुंधली नहीं पड़ी थी। उनके उदार हृदय ने और उतने ही उदार मन ने, उन्हें पूर्व को हीन माने बिना ही पश्चिम का सन्देश स्वीकार करने के लिए अनुप्रेरित किया।"

राजा राम मोहन राय का सन्देश था कि :- 'अंध अनुकरण से दूर रहते हुए विवेक के आधार पर आगे बढ़ना ही उचित है।

Scanned by CamScanner

★ राजा राम के योगदान ★

राजा राम मोहन राय का भारतीय दर्शन में उल्लेखनीय योगदान रहा है चाहे वह राजनीतिक हो या धार्मिक या सामाजिक चिन्तन का विचार। उनके उत्कृष्ट योगदानों को हम संक्षिप्त रूप से निम्नलिखित रूप से समझ सकते हैं —

(1) राम मोहन राय के राजनीतिक विचार :—

राजा राम मोहन राय का कार्यक्षेत्र मुख्यतया धार्मिक और सामाजिक जीवन था, किन्तु उन्होंने राजनीतिक संदर्भों में कभी भी अपने आपको पृथक नहीं रखा। उन्हें देश विदेश की, विशेष रूप से भारत और इंग्लैंड की राजनीति में गहरी रुचि और जबरा ज्ञान था। राजनीतिक जागरण की दिशा में चाहें उन्होंने प्रत्यक्ष कार्य न किया हो, धार्मिक और सामाजिक जागृति की दिशा में उनके द्वारा किये गये कार्यों ने राजनीतिक जागृति को जन्म देकर उन्हें 'नवीन भारत का संदेशवाहक' बना दिया था।

राजनीतिक चिन्तन के क्षेत्र में राम मोहन ने समय समय जो विचार प्रकट किये उनसे हमें राजनीतिक चिंतन का बोध होता है। उनके राजनीतिक चिंतन की कुछ प्रमुख बातें इस प्रकार हैं —

(i) व्यक्तिगत और राष्ट्रीय स्वतंत्रता का प्रतिपादन
(ii) प्रेस की स्वतंत्रता
(iii) न्यायिक व्यवस्था का स्वरूप
(iv) प्रशासनिक व्यवस्था का स्वरूप
(v) राजनीति और कानून के माध्यम से समाज सुधार
(vi) मानववाद और विश्व-बन्धुत्व

Scanned by CamScanner

राम मोहन राय के धार्मिक विचार

राम मोहन राय प्रमुख रूप से धार्मिक और सामाजिक पुनर्जागरण के सन्देशवाहक थे। धार्मिक सत्य के प्रति उनके मन में गहरी जिज्ञासा थी और इस जिज्ञासा के कारण ही उन्होंने विश्व के सभी धर्मों का गहरा अध्ययन किया था। वाराणसी में उन्होंने संस्कृत में भारत के प्राचीन धर्मशास्त्रों का अध्ययन किया था। अरबी और फारसी के अधिकारपूर्ण ज्ञान के आधार पर उन्होंने इस्लाम का भी मूल स्रोतों के आधार पर अध्ययन किया था। साथ ही ईसाई धर्म का भी विशद अध्ययन किया। इस कारण इन्हें तुलनात्मक धर्म का प्रकाण्ड पण्डित भी कहा गया। उनके प्रमुख धार्मिक विचार निम्नलिखित हैं —

(i) एकेश्वरवाद का प्रतिपादक, बहुदेववाद का खण्डन
(ii) मूर्ति पूजा और बलि प्रथा का विरोध
(iii) परम्पराओं के अन्धानुकरण का विरोध
(iv) धार्मिक सहिष्णुता का प्रतिपादन

राम मोहन राय के सामाजिक विचार

उनके समय में समाज में अनेक बुराइयां व्याप्त थी। समाज में रूढ़ियों ने अपना प्रभाव जमा लिया था। स्त्री जाति को हीन की भावना से देखा जाता था। सामाजिक जीवन के अंधकार को दूर करने के लिए राम मोहन राय ने विवेक और प्रकाश की ज्योत जलाई। सामाजिक जीवन में उनके विचार इस प्रकार है —

(i) परम्परावादिता का विरोध
(ii) सती प्रथा का विरोध
(iii) नारी स्वतन्त्रता, अधिकार, शिक्षा पर जोर
(iv) जाति प्रथा का विरोध

Scanned by CamScanner